ठाणे वेध २०१५

From Cover to the Core

बाहरसे सब लागे न्यारा, सुन अंतरके बोल
मितवा मनकी आँखे खोल ।।धृ।।
बाह्य कवच है, अंदर रस है, सृष्टीकी हर चीज
समझ ले दोनो, एकरुप है, जैसे फलमें बीज
शरीर, मनभी, मिल गये दोनो, बन जाते अनमोल
मितवा मनकी आँखे खोल।।१।।
हर कोई आया, साथमें लाया, नक्शा अपना एक
पहचानो तुम, हर रेखाको, नजर लगाके नेक
ना जाने तो, आनाजाना, बन जाएगा फोल
मितवा मनकी आँखे खोल ।।२।।
तु न अकेला, साथ है तेरे, राही कितने खास
दिखे अलग, लेकीन अंदरकी, जान ले उनकी आँस
इकदुजेके मिलनेसेही, बन गई दुनीया गोल
मितवा, मनकी आँखे खोल ।।३।।